४१: मानवीय व्यवस्था-३

दिनांक -१४/१२/२०११

मानवत्व, मानव का स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार है | समझने और प्रमाणित करने के कृत्य का नाम है स्वत्व | प्रमाण के साथ लोकव्यापीकरण करने के कार्य में स्वतंत्रता है | अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को प्रमाणित करने का अधिकार है | ये दोनों मौलिक प्रक्रियाएं हर समझदार मानव के साथ जुड़ा रहता है | इस क्रम में स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार के साथ मानव अर्थात हर नर-नारी व्यवस्था में जीना तथा समस्त व्यवस्था में भागीदारी करना होता है | इसका मूल सूत्र उपयोगिता पूरकता ही है | उपयोगिता- पूरकता का मूल सूत्र समाधान, समृद्धि, अभय, सह- अस्तित्व प्रमाणित होना है | इसी क्रम में नर-नारी में समानता, गरीबी-अमीरी में संतुलन सहित जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था में संतुलन बनाये रखने का विशेषाधिकार हर समझदार मानव में समाया रहता है |

इसके परिशीलन से पता लगता है कि इसकी आवश्यकता है या नही | क्योंकि अभी तक व्यक्तिवाद, समुदायवाद ही प्रचलित है | व्यक्तिवादी, समुदायवादी अस्मिताएं एक दूसरे के साथ खटकने(टकराने) के अलावा कुछ करता नहीं | इसके मूल में शिकायत बना रहता है | इस तरह शिकायत संघर्ष की स्थिति तक जाता है | इसको बनाये रखने के लिये पूरा मानसिकता का प्रयोग किया गया है | यह सम्भलता नहीं है | इस प्रक्रिया में झाँकने पर पता चला कि एक युद्ध समाप्त होने पर दूसरे का तैयारी चलता आ रहा है | इस प्रकार युद्ध से समाधान हीं है यह निष्कर्ष निकलता है | ऐसे निश्चय के साथ जीने का अवसर मनुष्य को मिल चुका है | इसी आधार पर पुनर्विचार का सम्भावना बनता है | पुनर्विचार रूप में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | इस क्रम में मानव भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त होने की सम्भावना है अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सम्भावना है |

इस विधि में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में जीने की सम्भावना है | मैं एक परिवार का सदस्य होने के आधार पर परिवार में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीना प्रमाणित हो चुका है | हर परिवार में समाधान,समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीने का अधिकार हर नर-नारी में समाया रहता है | इसके साथ गरीबी –अमीरी में संतुलन, नर-नारी में समानता होना पाया जाता है | मैं अपने में कोई रासायनिक, भौतिक वस्तुओं पर अधिकार न रखते हुए, उसे आवंटित करते हुए जी पाया; जिसके फलस्वरूप कोई वाद विवाद नहीं है, न ही मेरे कार्यों में कोई असहमति है | हमारे साथ जीने वालों का हाल भी ऐसा ही है | हमारे साथ जीने वाले सब परिवार ऐसे ही हैं, ऐसा मुझे अनुभव होता है |

इस क्रम में हर मानव जी सकता है | जीने से पहले समझ सकता है | समझने से पहले अनुभव कर सकता है | इसमें विधिवत अध्ययन प्रक्रिया, कार्य, अभ्यास चल रहा है | इसकी आवश्यकता स्पष्ट हो चुकी है | धरती बीमार होने के आधार पर इससे मुक्त होने की आवश्यकता हो जाती है | मुक्त होने के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | चेतना विकास मूल्य शिक्षा के आधार पर पारंगत होने, प्रमाणित होने की आवश्यकता बन जाती है |

आवश्यकता के आधार पर आचरण करना स्वाभाविक है | यह अधिकार हर मानव के साथ जुड़ा हुआ है | इसको समझने के पश्चात मानव में अहंकार, इर्ष्या, सभी विकार और विसंगतियाँ स्वयं नियंत्रित होने लगती हैं | विकार का स्वरूप चार विषय, पांच संवेदना ही हैं | विकार को षड् विकार के रूप में देखा गया है | यह प्रचलित बात है | इस क्रम में मानव स्वस्थ रूप में जीने के लिये मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना एकमात्र उपाय है | इन तीन चेतनाओं में जीना ही व्यवस्था है, अखण्ड समाज है | इन तीन चेतनाओं में जीना ही मानवत्व है | सर्व शुभ हो!

- ए. नागराज